e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

उपन्यास खंजन नयन में सामाजिकता

सुशील कुमार
शोधार्थी
महर्षि दयानन्द विश्वविद्यालय,
रोहतक

अमृतलाल नागर का उपन्यास 'खंजन नयन (1981) को प्रकाशित हुआ यह उपन्यास हिन्दी के सुज्ञात भक्त कवि सूरदास के जीवन चरित्र को ओपन्यासिक रूप में प्रस्तुत करता है। खंजन नयन की सार्थकता इसी में है कि जिस व्यक्ति को विधाता ने तन की आँखे नहीं दी उसी को मन की आँखे देकर दृष्टि सम्पन्न बना दिया। सूरदास ने अपने इन्हीं 'खंजन—नयनों' से इष्टदेव के दर्शन किए। 'खंजन नयन' में व्यक्त सामाजिकता के अन्तर्गत हम यह देखेंगे कि उस समय समाज की क्या स्थिति थी? समाज में कौन—कौन से वर्ग थे, उस समय नारी की क्या दशा थी, उस समय के समाज का नारी के प्रति क्या दृष्टिकोण था क्या नारी अपने अधिकारों के प्रति अपनी स्थिति के प्रति संचेत थी? व तत्कालीन समाज में धर्म का क्या स्वरूप था?

तत्कालीन समाज

सूरदास के जन्म से ही इस देश में सुल्तानों का राज्य था। सूरदास का जीवन काल असाधारण रूप से दीर्घ था। एक सौ चार वर्ष पूरे करके उनका देहान्त हुआ। स्वाभाविक रूप से बहुत से सुल्तानों तथा सम्राटों का उत्थान पतन उन्होंने देखा था। उनके जन्म व विकास काल में इस देश में सिकन्दर लोधी का राज्य था जो अपने हिन्दू विरोध के लिए इतिहास में कुख्यात है। इसके बाद इब्राहीम लोधी, बाबर हुमांयू और अकबर का शासन काल भी उन्होंने देखा। लेकिन उसमें लेखक ने मुख्य रूप से सिकन्दर

लोधी के युग का विस्तार से वर्णन किया है। क्योंकि एक भक्त व कवि के रूप में वही सूर के संघर्ष का सर्वाधिक महत्वपूर्ण काल था।

उस समय शासक वर्ग के मुसलमान होने के कारण हिन्दुओं की दशा बहुत दयनीय थी। उन पर रात–दिन अत्याचार किए जाते थे। लोगों की धन सम्पति लुटी जाती थी। स्त्रियों की इज्जत लूटी जाती थी। स्त्री की इज्जत व धन की लूट ही इन लोगों के लिए पुण्य कार्य बन गई थी। मथुरा व वृदांवन में हिन्दुओं के मन्दिर ज्यादा होने के कारण वहां पर अत्याचार और लूटमार कुछ ज्यादा ही हुआ करती थी।

इससे पहले भी जब सिकन्दर सुल्तान गद्दी पर बैठा तो उसने भी मथुरा में भयंकर मारकाट मचाई थी और जो लोग उस समय जबरदस्ती मुसलमान बनाए गए थे वे ही उस समय शहर के सबसे अधिक आंतककारी थे। हर जगह काजियों और मुल्लाओं की जय–जयकार बोलती थी। धर्म के नाम पर मुसलमान लोग हिन्दू बस्तियों को लूट रहे थे। सरकारी अमला यों तो साथ नहीं दे रहा था पर लूट की दौलत आखिर किसे बुरी लगती है। यूं भी "काफिरों का काबा' मथुरा और मथुरावासियों को बड़ी ओछी दृष्टि से देखता था।"[1]

यदि कोई व्यक्ति दूसरे धर्म को अपने धर्म के समकक्ष बता देता था तो यह बात उसे सूली चढ़ाये जाने के लिए काफी थी क्योंकि "एक बार सिकन्दर के बाप के राज में एक पंडित ने बड़े जतन से इनकी भाषा पढ़ी, उनके धर्म के सारे पौथे पढ़े फिर एक दिन सभा में उसने अपने व इस्लाम धर्म को एक समान बताया और कहा कि दोनों अद्वैत सिद्धान्त को मानते हैं। सो इनके धर्म को गलत क्यों नहीं मानना चाहिए। और बस, इसी बात पर काजी मुल्लाओं ने उस पंडित को फांसी पर चढ़ा दिया।[2]

इसके अतिरिक्त उस समय हिन्दुओं के बाल बनवाने पर भी रोक थी कोई भी हिन्दु बाल नहीं बनवा सकता था यदि कोई ऐसा करता था तो

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

उसे सजा मिला करती थी। एक जगह कालू केवट अपने आक्रोश को व्यक्त करता हुआ कहता है "जीना मुहाल हो गया है इस सिकन्दर सुल्तान के राज में । बाल नही बनवा सको हो – ससुरे द्रौपदी के चीर से बड़े चले गऐ हैं। सबके म्हौड़ान पे पूतना के से थन लटक रचे हैंगे। जमना जी में नहाईए नहीं, मुंडन आदि सभी में बाधा।"[3]

उस समय ब्याह के संस्कार ऐसे थे जो छिपाये भी नहीं जा सकते थे क्योंकि हिन्दुओं को ब्याह के अवसर पर पण्डितों के साथ–साथ काजी को भी दक्षिणा देनी पड़ती थी। इसलिए आश्चर्य नहीं कि मथुरा में आंतक नृंशंसता एवं विद्वेष के सहारे राज्य करता सिकन्दर लोधी सूरदास को कंस के समान लगा हो.... "महाकठिन है समय अजोग सिर पर कंस मधुपुरी बैठो।"[4]

पद के आधार पर नागर जी ने सूर पर उस युग के प्रभावों का भी संकेत कर दिया है। इस पर टिप्पणी करता हुआ बूढ़ा गनेसी कहता है ... "बड़ी सच्ची बात कही तुमने। इस जबनन ने तो ऐसी परलय ढाई है कि कुछ कहत नाय बने।"[5]

इसी प्रकार एक स्थान पर सूरदास हरि को सम्बोधित करता हुआ कहता है – "हरि तुमने तो कंस को मारकर मथुरा जीत ली थी .... फिर तुम्हारी जन्म भूमि में यह नया कंस कहां से आ गया? कैसा आहाकार मचा है कल से। किसी का पति मरा किसी का पुत्र कितनी स्त्रियों जो कल तक जो भले घर की बहु बेटियाँ थी आज अगर यदि जी रही होगी तो वेश्या से भी बुरी गति होगी। कल तक जो धनी थे वे आज भिखारी हो गए । सनाथ अनाथ हो गए।"[6]

इस प्रकार यह कह सकते है कि सिकन्दर सुल्तान के राज में हर तरफ हाहाकार मचा हुआ था। किसी भी हिन्दु का जीवन सुरक्षित नहीं था। उस समय हिन्दुओं के लिए अपने धर्म की रक्षा करनी ही बहुत मुश्किल थी

क्योंकि हिन्दू लोग मुसलमानों के अत्याचारों से डर कर मुस्लिम धर्म को अपना रहे थे और उनकी हिन्दू धर्म पर आस्था धीरे–धीरे कम होती जा रही थी।

सिकन्दर सुल्तान बेहद घमंडी बदमिजाज व व्याभिचारी शासक था जो अधिकांशतः स्वार्थी मुल्ला मौलवियों की आंखों में देखता था। वह हिन्दुओं के मन्दिर तोड़ता था। उन पर तरह–तरह के अत्याचार करता था। मुल्ला मोलवियों से बना उसका तन्त्र उसकी इस कारगुजारियों की ओर भी भड़काया करता था मुसलमानों के इन अत्याचारों के लिए कुछ हद तक हमारा हिन्दू समाज भी दोषी था क्योंकि हिन्दुओं में आपसी फूट थी। ये लोग आपस में एकजुट होकर मुस्लिम शासकों का सामना करने के बजाय आपस में ही लड़ते झगड़ते थे। मुस्लिम समाज के लोग तो हिन्दुओं पर अत्याचार करते ही थे पर हिन्दू समाज के भी कुछ एक लोग ऐसे थे जो हिन्दुओं पर अत्याचार करते थे। जैसे छिदम्मी माल्लमार्तण्ड जो जाति का ब्राह्मण था उच्च कुल में जन्म लेने के बावजूद भी उसके विचार बहुत ही नीच थे। यह काशी का बेताज बादशाह था। बड़े–बड़े लोग जैसे हाकिम, हुककाम आदि भी इससे डरते थे क्योंकि इसके पास हमेशा ही गुँडों की विशाल फौज हुआ करती थी। एक कर पठान हाकिम लिया करते थे तो दूसरा कर यह छिदम्मी। यदि कोई व्यक्ति कर नहीं देता था तो ये व्यक्ति जबरदस्ती कर की वसूली करते थे।”[7] एक तो जनता पहले ही मुसलमानों के अत्याचारों से दुखी थी दूसरे छिदम्मी जैसे लोग भी उन पर जबरदस्ती किया करते थे जिसके कारण उनकी स्थिति दिन–प्रतिदिन खराब होती जा रही थी। इसी तरह उस समय और भी बहुत से ऐसे लोग थे जो जनता पर अत्याचार करके अपना स्वार्थ सिद्ध किया करते थे।

इन सारे वर्णनों से हमारे सामने उस समय के समाज का जीता जागता चित्र प्रस्तुत हो जाता है कि उस समाज की कैसी स्थिति थी। उसमें रहने वाले लोगों की दशा कैसी थी?

उस समय का समाज मुख्य रूप से दो भागों में बंटा हुआ था।

1. हिन्दू समाज

यदि हम उस समय के हिन्दू समाज पर दृष्टिपात करें तो एक बात बड़ी स्पष्ट रूप से हमारे सामने उभर कर आएगी कि उस समय हिन्दू धर्म के जो बड़े–बड़े लोग थे, एक दूसरे की उन्नति को देखकर जला करते थे तथा एक दूसरे को नीचा दिखाने के लिए कुछ भी करने को तैयार रहते थे। सभी लोग तो नहीं पर कुछ एक लोग तो ऐसे अवश्य थे जो अपने भीतर इस प्रकार के विचार रखा करते थे। इनमें हम काशी के ब्राह्मण समाज को तथा अयोध्या के ब्राह्मण समाज में पुददन पण्डित व मल्लमार्तण्ड को गिना सकते हैं।

काशी में जब सुरस्वामी के भजनों की धूम मचने लगी और धीरे–धीरे उनकी लोकप्रियता बढ़ने लगी तो काशी का कथा वाचक ब्राह्मण समाज सुरस्वामी की इस बढ़ती हुई लोकप्रियता से जलने लगा। उनकी आंखों में सूरस्वामी कांटे की तरह खटकने लगे। एक दिन ये लोग सूरस्वामी जी को नीचा दिखाने के लिए तथा उनसे बदला लेने के लिए एक षड़यन्त्र रचते है और उन पर चरित्रहीनता जैसा घटिया व नीच इल्जाम लगाकर उनकी इतनी पिटाई करते हैं कि सूरस्वामी अधमरे हो जाते हैं और अंत में वह मथुरा छोड़ने का ही संकल्प कर लेते हैं।”[8]

इसी तरह अयोध्या का ब्राह्मण समाज भी है। जब वहां पर सूरस्वामी अपनी भाषा में भागवत लिखवाना चाहते हैं और इसके लिए पुददन पण्डित से लिखिए का प्रबन्ध भी करा लेते है तो इसी बात पर पुददन पण्डित तथा मल्लमार्तण्ड में लड़ाई झगड़ा हो जाता है, क्योंकि मल्लमार्तण्ड चाहता है

International Journal of Research
Special Issue for UGC Approved Journal-Hindi Papers
Available at https://edupediapublications.org/journals
e-ISSN: 2348-6848
p-ISSN: 2348-795X
Volume 04 Issue 15
November 2017

कि सुरस्वामी उनके यहां ही गाए और उनके यहाँ ही भागवत लिखें। इसके लिए वह सूरस्वामी से कहता भी है :–

“आपको चेताए देते हैं महाराज कासी, जौनपूर, मीरजापूर, चुनार, अस्थानों पर आप सबसे पहले कहीं कथा बाँचेगे – गाएँगे तो वह हमारे यहाँ नहीं तो कहीं भी कथा नहीं होएगी।”[9]

लेकिन दूसरी और पुद्दन पण्डित जिससे स्वामी जी पहले ही बात कर चुके ये कहता है स्वामी जी क्या हमारे यहां ही लिखेंगे। तुम कुछ भी कर लो। इसी बात पर लड़ाई झगड़ा काफी बढ़ जाता है और अन्त में स्वामी जी पुद्द्न पंडित को कह देते है कि मैं अपनी कथा को रक्त रंजित नहीं बनाऊंगा यह मेरा निश्चित मत है।”[10]

इस प्रकार यह लोग ही नहीं उस समाज में और भी बहुत से लोग ऐसे हैं जो आपस में इस प्रकार के भाव अपने मन में रखते थे।

2. मुस्लिम समाज

इसके अतिरिक्त उस समय का मुस्लिम समाज भी है जो हिन्दुओं पर अत्याचार करता है और उनको धर्म परिवर्तन करने को बाध्य करता है क्योंकि उस समय शासक वर्ग मुस्लिम समाज ही था। लेकिन इस मुस्लिम समाज में सब लोग एक जैसे नहीं थे। इनमें से कई लोग ऐसे थे जो हिन्दुओं से सहानुभूति रखते थे। उन पर किए जाने वाले अत्याचारों के विरोधी थे। इन लोगों के सबसे पहले हम रहमत खां को लगे जो दिल्ली गुड़गांव का सरदार था। इसी रहमत खाँ ने गुड़गांव में सूर के पिता के लिए पक्का घर बनवाया और सूरस्वामी जी की सेवा के लिए दास, दासियां भी रखी। काशी में मल्लमार्तण्ड से सूरस्वामी की संघर्ष की स्थिति बनती है तो इसी रहमत खाँ ने जो उन दिनों संयोगवश वहीं उपस्थित थे, सूर की रक्षा की। इतना ही नहीं उसे राज परिवार में मान–सम्मान भी दिलवाया।

इसी प्रकार सरदार अकरम खाँ भी है। अकरम खाँ जब अपने बेटे व भान्जि की मौत का बदला लेने के लिए गोपी की नगरिया में जाता है और वहां पर जब उसे पता चलता है कि उसका बेटा चरित्रहीन था तो वह चुपचाप सिर झुकाकर वापिस लौट जाता है। इसके अलावा सूफी फकीर दिल खुश साह भी हैं जो अनेक मतभेदों के बावजूद सूर का सर्वाधिक प्रिय मित्र और अंतरंग सखा है। इस प्रकार हम यह नहीं कह सकते कि उस समय के मुस्लिम समाज में सारी बुराईयाँ ही थी और हिन्दु समाज में सारी अच्छाईयाँ ही थी बल्कि अच्छाई बुराई का मिश्रण इन दोनों समाज में था।

संदर्भ

1. अमृतलाल नागर : 'खंजन नयन' राजपाल एण्ड सन्स, पृ0 सं0 10
2. वही, पृ0 सं0 82
3. वही, पृ0 सं0 12
4. वही, पृ0 सं0 12
5. वही, पृ0 सं0 13
6. वही, पृ0 सं0 22
7. वही, पृ0 सं0 144
8. वही, पृ0 सं0 143
9. वही, पृ0 सं0 144